हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

कविवर भूधरदास विरचित बारह–भावनाओं का मनोरम चित्रण

कीर्ति जैन

सारांश–यद्यपि द्वादश अनुप्रेक्षा का विशय जैनदर्शन की मौलिक देन है, तथापि इस विषय की लोकप्रियता न केवल जैनों में, अपितु अन्य धर्मो के विद्वानों और कवियों में भी बहुत हुई है। यह विषय ही इतना हृदयहारी है कि लोगों का चित्त आकर्षित किये बिना रहता नहीं है। न केवल इस विषय से अन्य धर्मो के कवि आकर्षित हुए, अपितु उन्होंने इस पर अनेक 'बारह भावनाओं' की रचना भी हैं। इस प्रकार देखा जाये तो आज हमारे समक्ष एक सौ से अधिक बारह भावनाएं उपलब्ध हैं।

इस विषय की महत्ता इसलिए भी है कि ये भावनायें संसार, भारीर और भोगों में उलझे हुए संसारी लोगों के मानस में वैराग्य भावना जगाकर उन्हें सजग करता है कि ये सारे संयोग जीवन के समाप्त होने तक ही हैं, तत्प चात् सब बदल जाने वाले हैं, अतः जो भी हित के उपाय भूत तत्व हैं, उनकी आराधना करने का यह उत्तम समय व्यर्थ मत जाने दो। यह मनुश्य जन्म बार–बार नहीं मिलता है।

द्वादश भावनाओं के स्वतंत्र ग्रन्थ भी श्रेष्ठ आचार्यों द्वारा रचे गये हैं, जिनमें कार्तिकेयाचार्य का **कार्तिकेयानुप्रेक्षा** और आचार्य कुन्द कुन्द का **बारस अणुवेक्खा** प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थ तो इस प्रकार के हैं, कि उनके नाम और मूल विषयवस्तु के अतिरिक्त उसमें अवान्तर प्रसंग के रूप में बारह भावनाओं का उल्लेख हुआ है, जैसे– आचार्य उमास्वामी के **तत्वार्थसूत्र** में और मुनीन्द्र रविचन्द्र विरचित '**आराधना समुच्चय**' और श्रीगुरुदास विरचित **'योगसारसंग्रह**' में भी अवान्तर प्रसंग के रूप में बारह भावनाओं का निरूपण किया गया है।

मुख्य शब्द – अनित्य, अशरण, अन्यत्व, अशुचि, निर्जरा, बोधिदुर्लभ,।

शोध उद्देश्य – जैन धर्म से सबंधित शोध–जगत में विगत अर्थ शताब्दि में व्यापक परिवर्तन हुये हैं। न केवल भारतीय शोधार्थी अपितु विदेशी शोधार्थियों ने भी इस क्षेत्र में अपनी रूचि दिखलाई है। जैन धर्म एवं जैन साहित्य व जैन मुनि परंपरा का इतिहास बहुत पुराना है। लगभग 4500 वर्ष पुराना यह धर्म अहिंसा सत्य संयम चोरी न करना एवं वैराग्य आदि की शिक्षा देता है। ये इस धर्म को पांच महान प्रतिज्ञायें कहलाती है। जैन धर्म वीत–राग पर आधारित धर्म है जो कि सही धारणा सही ज्ञान एवं सही आचरण के माध्यम से जन्म मृत्यु एवं पुनर्जन्म के चक्र को तोड़कर मौक्ष को प्राप्त करने के विषय को बतलाता है। वर्तमान में न केवल भारत वर्ष आपितु विदेशों में भी जैन धर्मावलंबियों की बड़ी संख्या है जो इसे और भी समृद्ध कर रहीं है।

ISSN : 2582-9092

शोध पद्धति – परिकल्पना अर्थात् पर्वू– चिन्तन किसी भी कार्य को करने से पूर्व हम मस्तिष्क में विचार ही एक प्रकार की कल्पना है। शोध कार्य परिकल्पना के निर्माण एवं उसके परीक्षण के मध्य की प्रक्रिया है। इसके अलावा परिकल्पना को संभावित समाधान भी कहा जाता है। यहां पर पूर्व कथन को अस्थाई रूप से सही इस प्रकार परिकल्पना का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार परिकल्पना एक विचार दशा या सिद्धान्त होती है, जो संभवतः बिना किसी विश्वास के स्वीकार कर ली जाती है। जिससे कि उनके तार्किक परिणाम निकाले जा सकें तथा तथ्यों को सहायता से विचार की सत्यता की जांच की जा सकें।

प्रस्तुत शोध निम्न परिकल्पनाओं पर अधारित है।

1. आधुनिक काल में जैनधर्म एवं जैन धर्म एवं ग्रन्थों के अध्ययन एवं चिन्तन कार्य में व्यापक प्रगति हुई है।

2. जैन धर्म के प्राचीन ग्रन्थों की पुरानी पाण्डुलिपियों को सुरक्षित एवं संरक्षित करने का कार्य किया गया है ताकि शोधर्थी एवं जिज्ञासुजन उनका लाभ ले सकें।

3. जैन धर्म ग्रन्थों पर शोध करने वाले शोधर्थियों द्वारा बारस अणु वेक्खा पर शोध कार्य तो किये गये है किन्तु इसका दार्शनिक पक्ष अभी सामने आना अभी प्रतीक्षित है।

4. जैन धर्म के प्राचीन ग्रन्थों पर अभी शोधकार्य एवं शोध प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है।

5. जैन ग्रन्थों पर शोधकार्य करने वाले शोधर्थियों का प्रोत्साहन एवं ऐसे संस्थान स्थापित करने की आवश्यकता है। जहा शोध सामग्री सहज रूप से उपलब्ध हो सके।

विश्लेषण – सूत्रानुसार इन भावनाओं के नाम इसप्रकार हैं– 1. अनित्य, 2. अशरण, 3. संसार, 4. एकत्व, 5. अन्यत्व, 6. अशुचि, 7. आस्रव, 8. संवर, 9. निर्जरा. 10. लोक, 11. बोधिदुर्लभ और 12. धर्म – इन बारह तत्वों का बारम्बार अनुचिन्तन करना ही अनुप्रेक्षा है।

इन बारह भावनाओं में प्रारम्भिक छह भावनायें संसार, भारीर और भोगों को अनित्य, अशरण, अशुचि बताकर जीव को उनसे पृथक् एकाकी बताती है और भोश छह भावनायें जीव के दुखरूप आस्रव का निरूपण करते हुए उसके उपायभूत संवर निर्जरा और धर्म का वर्णन करती है और इस धर्म को लोक में दुर्लभतम सिद्ध करती है। इसप्रकार इनका एक क्रमिक विकासक्रम भी मनोवैज्ञानिक दृश्टि से अनुकूल ही है।

ISSN : 2582-9092

इस आलेख में कविवर श्री भूधरदास जी विरचित बारह भावनाओं को विशय बनाया गया है, जो इस प्रकार हैं–

दोहा

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन अपनी–अपनी बार।।1।।

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियां जीव को, कोई न राखनहार।।2।।

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान।
कहूं न सुख संसार में सब जग देख्यो छान।।3।।

आप अकेला अवतरै, मरै अकेलो होय।
यूं कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय।।4।।

जहाँ देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर सम्पति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय।।5।।

दिपै चाम–चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन–गेह।।6।।

मोह–नींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा।
कर्म–चोर चहूं ओर, सरवस लूटैं सुख नहीं।।7।।

सतगुरु देय जगाय, मोह–नींद जब उपशमै।
तब कछु बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुकै।।8।।

ISSN : 2582-9092

ज्ञान–दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
या विध बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर।।9।

पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।10।।

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान।।11।।

धन कन कंचन राजसुख, सबही सुलभकर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान।।12।।

निष्कर्ष – यह अत्यन्त संक्षिप्त और सारगर्भित बारह भावना है। अतः यह सहज ही स्मरण की जा सकती है। इसमें छंद योजना दोहा को चुना गया है, जो कि आम व्यक्ति के लिए अत्यन्त ही सहजतया गेयरूप होता है।ज्ञातव्य है कि छंदों में दोहा छंद सबसे छोटा और संक्षिप्त होता है। अतः इसे आसानी से याद भी किया जा सकता है।

इन बारह भावनाओं का प्रत्येक जीव को प्रतिदिन अव य चिन्तन करना चाहिए, इससे परिणामों में निर्मलता आती है, जिनधर्म की बातें ग्रहण होने रूपी बुद्धि बन सकेगी। संसार भारीर और भोगों से अरुचि होकर वैराग्य भावना बलवती होती है, फलस्वरूप मोगमार्ग का प्रयास उग्र हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1- कवि भूधरदास, बारह भावना, बारह भावना भातक, जयपुर

2- आचार्य उमास्वामी, तत्वार्थसूत्र, वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट, जयपुर

3- स्वामी कार्तिकेय, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास

4- आचार्य कुन्दकुन्द, वारसाणुवेक्खा, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास

ISSN : 2582-9092

5- श्रीरविचन्द्र मुनीन्द्र, आराधना समुच्चय, सम्पादक, डॉ0 भुद्धात्मप्रकाश जैन, सोमैया प्रकाशन, मुम्बई

6- श्री गुरुदास, योगसारसंग्रह, सम्पादक, डॉ0 शुद्धात्मप्रकाश जैन, सोमैया प्रकाशन, मुम्बई

7- बारह भावनाः एक अनु ीलन, डॉ0 हुकमचन्द भारिल्ल, पं0 टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

शोध छात्रा
स्वामी विवेकानंन्द
विश्वविद्यालय,सागर म.प्र.